विवाह (लघुग्रंथ)

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

- भूमिका ६
- प्रस्तुत लघुग्रंथके विषयमें प्राप्त दिव्य ज्ञान ८

१. विवाहका अर्थ १०
२. विवाहसंस्कारका महत्त्व १०
३. विवाह किस आयुमें करना चाहिए ? १२
४. पंजीकृत विवाहकी अपेक्षा धार्मिक पद्धतिसे किया गया विवाह श्रेयस्कर क्यों है ? १३
५. विवाह-निश्चिति हेतु जन्मकुंडलियां देखना २०
६. विवाहदिन और मुहूर्त निश्चित करना २०
७. विवाहपत्रिका कैसी हो ? २२
८. वर-वधूका परिधान कैसा हो ? २७
९. वाग्दान (वचन देना, वचनबद्धता) ३०
१०. विवाहके दिन करने योग्य विधियां / कृत्य ३०
११. विवाहसे संबंधित कुछ कृत्य ४८
    * विवाहकी विधियोंमें पत्नी पतिके दाएं ओर क्यों बैठे ? ४८
    * पति-पत्नी नमस्कार कैसे करें ? ४९
१२. विवाह समारोहमें क्या न करें ? ५१
    * विवाहका भोजन तामसिक अथवा पाश्चात्य पद्धतिका न रखें ! ५६

* धनका अपव्यय न करें ! ५७
१३. विवाहके प्रत्येक कृत्यका अध्यात्मीकरण हो ! ५८
१४. कार्य संपन्न होनेपर कृतज्ञता व्यक्त करें ! ६१
१५. शास्त्रानुसार विवाह संपन्न होनेपर उपस्थित जनोंद्वारा व्यक्त की गई प्रतिक्रियाएं ६२
१६. विवाहसंस्कारके उद्देश्यको धूलमें मिलानेवाले प्रशासन एवं न्याय-संस्था ! ६५

भूमिका

जीवनके प्रमुख सोलह प्रसंगोंमें ईश्वरके समीप जानेके लिए करने योग्य श्रेष्ठ संस्कार हिंदु धर्ममें बताए गए हैं । उनमें सर्वप्रमुख संस्कार है - 'विवाह-संस्कार' ! महंगी विवाहपत्रिका, मूल्यवान वेशभूषा, भव्य विवाह कार्यालय, बैंडबाजा, पटाखोंकी भरमार, कर्णकर्कश संगीत, विद्युतकी चकाचौंध, भोजनका ठाटबाट आदिसे युक्त विवाह, अर्थात् ही 'उत्तम विवाह', ऐसी अयोग्य धारणा वर्तमान समाजकी हो गई है । किंतु यह सब करते समय विवाहकी धार्मिक विधि शास्त्रीय पद्धतिसे करनेकी ओर अनदेखी हो रही है । विवाहका वास्तविक उद्देश्य है, दो जीवोंका भावी जीवन परस्परपूरक एवं सुखी होनेके लिए ईश्वरके आशीर्वाद प्राप्त करना । इसके लिए विवाहविधि धर्मशास्त्रके अनुसार करना अत्यावश्यक है । अतः इस लघुग्रंथमें विवाहकी धार्मिक विधियोंके शास्त्रीय आधार प्रस्तुत करनेके साथ ही विवाहमें होनेवाली शास्त्रविरुद्ध कुप्रथाओंसे सावधान करते हुए विवाह आदर्शरीतिसे कैसे करना चाहिए, इसका मार्गदर्शन किया गया है । इस लघुग्रंथको पढनेपर यह भी बोध होगा कि, छोटे-छोटे कृत्योंद्वारा विवाहको 'धर्मप्रेरक उपक्रम' कैसे बनाया जाए ।

वर्तमानमें विवाहसंस्कारके मूल उद्देश्यपर ही आघात करनेवाले शासन / न्यायसंस्थाके निर्णयोंके कारण परिवारसंस्थाके ही लुप्त होनेका संकट आन पडा है । इसके विरुद्ध हिंदुओंको क्या करना चाहिए, इसपर मार्गदर्शन भी इस लघुग्रंथमें किया गया है ।

श्री गुरुचरणोंमें यही प्रार्थना है कि, इस लघुग्रंथको पढकर सभी विवाहको 'धार्मिक संस्कार'के रूपमें देखें एवं विवाहोत्सवकी पवित्रता बनाए रखें ! - संकलनकर्ता